उत्तराखण्ड के समाचार पत्र: एक ऐतिहासिक अध्ययन

रेखा आर्या*

सारांश

मनुष्य एक जिज्ञासु प्राणी है। वह सदैव कुछ न कुछ पाने की पद्धति से इस लक्ष्य की ओर लगा रहता है। इसी का नतीजा है कि आज मनुष्य ने अनेक खोजें कर ली हैं। हमारे देश में पत्रकारिता को लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ के रूप में माना जाता है क्योंकि यह जन–जन की अभिव्यक्ति को मुख्य रूप से व्यक्त करने का जनतांत्रिक तरीका है। ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में नारद मुनि को विश्व का पहला पत्रकार माना गया है। एक स्थान से दूसरे स्थान पर समाचार देने का काम नारद मुनि करते थे। वह काल हमारे धर्म ग्रन्थों में सतयुग कहलाता है। इससे ज्ञात होता है कि पत्रकारिता पूर्व ही जन्म ले चुकी थी। पत्रकारिता उस जमाने में 'एक मीडिया' 'एक व्यक्ति' पर आश्रित थी। इस प्रकार से मुगलकाल में अखबारात निकलते थे। पत्रकारिता की शुरूआत चीन के तंग वंश के शासन के दौरान हुई। भारत में प्रेस 1550 ई0 में पुर्तगालियों ने स्थापित की। हिक्की भारत का प्रथम पत्रकार था, जिसने बंगाल गजट को प्रकाशित किया। भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में समाचार पत्रों का बहुत बड़ा योगदान रहा। सर्वप्रथम 1868 में समय विनोद नाम का समाचार पत्र जसपुर (जिला–नैनीताल) से निकला। यह उत्तराखण्ड से निकालने वाला पहला समाचार पत्र था। परन्तु जिस अखबार ने समस्त उत्तराखण्ड में जन–जागृति उत्पन्न की वह था अल्मोड़ा अखबार। ब्रिटिश कुमाऊँ से प्रकाशित होने वाले पत्र शक्ति, पुरूषार्थ, कर्मभूमि, समता, इत्याादि प्रमुख पत्र थे।

मुख्य शब्द – समाचार–पत्र, उत्तराखण्ड, अखबार, प्रकाशन, साप्ताहिक।

प्रस्तावना

भाषा और लिपि के विकास के बाद अपनी अभिव्यक्ति को एक ठोस आधार प्रदान करने के लिए जागरूक एवं प्रबुद्ध समाज ने पत्रकारिता को विकसित किया। विचारों को व्यक्त करने का यह सबसे सुन्दर और शक्तिशाली माध्यम है। रा0 र0 खडिलकर लिखते हैं कि दुनिया में कहीं भी किसी भी समय छोटी–छोटी घटना या परिवर्तन हो, उनका शब्दों में जो वर्णन होगा, उसे "समाचार पत्र" कहते हैं। समाचार पत्र सदैव नया, दिलचस्प और मनोरंजक होता है। पत्रकारिता एक कला है। एक ऐसी कला जो दूरियाँ घटाती है। पत्रकारिता का मूल उद्देश्य सूचना देना, शिक्षित करना तथा मनोरंजन करना है। इन तीन में ही सम्पूर्ण पत्रकारिता का सार समाहित किया जा सकता है। साथ ही इसमें निम्नलिखित तत्व जैसे नूतनता, सत्यता, सभ्यता, सुरूचिपूर्ण, संशय और रहस्य समाहित होते हैं। उक्त तत्वों के अलावा संघर्ष, स्पर्धा, उत्तेजना, रोमांस, नाटकीयता, परिणाम, मानवीय गुणों का उद्रेक, असाधारणता, आर्थिक, परिवर्तन और उद्भावना समाचार के ऐसे तत्व हैं जिनसे समाचार पत्रों के प्रति आकर्षण उत्पन्न होता है।[1]

पत्रकारिता एक ऐसा सशक्त माध्यम है जो हमारे जीवन की विविधताओं, नित्य नूतनताओं और दैनिक घटनावलियों–प्रसंगाावलियों को शीघ्र प्रस्तुत करने की अतुल क्षमता रखता है। यदि हम इतिहास के पन्नों को पलटकर देखें तो पाते हैं कि मानव सभ्यता के इतिहास में एक स्थान से दूसरे स्थान पर समाचार देने का काम नारद मुनि करते थे। इसी प्रकार यह काम त्रेतायुग में पवन पुत्र हनुमान ने किया जिन्होंने अपने प्राणों की परवाह किये बिना सीता तक भगवान राम का संदेश पहुँचाया और उनकी कुशलता का संदेश राम को दिया। द्वापर युग में महाभारत की सम्पूर्ण घटना का आँखों देखा हाल संजय ने, जो कि युद्ध स्थल से कोसों मील दूर बैठे थे, हस्तिनापुर नरेश धृतराष्ट्र को बराबर 18 दिनों तक सुनाया। धर्मशास्त्रों, महाकाव्यों के अनुसार मनुष्य अपने संदेश कबूतरों और नदियों के बहते जल में बांस की नलियों व तुम्बियों से भेजता था।[2]

मौर्य काल में अशोक के शासन काल में शिलालेख, स्तम्भलेख, ताम्रपत्रों का प्रयोग प्रचार के लिए किया गया। वहीं मध्यकालीन भारत में भी राजा व नवाब अपने राज्य के समाचार पत्र प्राप्त करने के लिए वाकियानवीस नियुक्त करते थे। फ्रांस के नैपोलियन बोनापोर्ट ने कहा था कि उसे हजारों संगीनें (बन्दूकें) उतना भयभीत नहीं करती हैं जितना कि एक समाचार पत्र। उसी प्रकार स्टालिन कह उठे कि समाचार पत्र तोप के गोले से, प्रेस तोपखाने से अधिक खतरनाक है। इन समाचार पत्रों के भविष्य में अकबर इलाहाबादी का यह शेर सर्वथा उपयुक्त है–

खींचों न कमानों को, न तलवार निकालो।
गर तोप मुकाबिल हो, तो अखबार निकालो।।

* शोध छात्रा, इतिहास विभाग, डी0एस0बी0 परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

अब प्रश्न उठता है कि समाचार पत्र कब से निकलने शुरू हुए? आज से लगभग 1325 वर्ष पूर्व चीन का पहला समाचार पत्र चिंगपाओ को निकालने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जो कि विश्व का प्रथम समाचार पत्र था। धीरे–धीरे लोगों में जागरूकता बढ़ी और उनके सामने वह सुनहरा दिन भी आया जब दैनिक समाचार पत्र निकलना शुरू हुआ। मार्निंग पोस्ट यह 1772 में लन्दन से निकालने वाला पहला समाचार पत्र था। उत्तराखण्ड का पहला समाचार पत्र 'द हिल्स' मसूरी से जान मेकिनन ने प्रकाशित किया था। उस दौर में अखबार का प्रेस सेमिनरी स्कूल परिसर में था। उस दौर के अंग्रेजशाही विरोधी अखबार 'मेफिसलाइट' का प्रकाशन भी मसूरी में हुआ। हमारे देश में लोग मेलों, उत्सवों, खेलों तथा बाजार में मिलकर एक दूसरे से कुशल समाचारों का मौखिक रूप से आदान– प्रदान करते है।[3]

भारत में प्रेस 1550 ई0 में पुर्तगालियों ने स्थापित की। इसके बाद कोचीन तथा बम्बई आदि शहरों में भी ऐसे प्रेस स्थापित किए गए। भारत में पत्रकारिता के विकास की दृष्टि से हॉलैण्ड निवासी विलियम बोल्ट्स ने प्रयास किए। जैम्स ऑगस्टम हिक्की को भारतीय पत्रकारिता का जनक कहा जाता है। उन्होंने 29 जनवरी 1780 को बंगाल गजट या कलकत्ता जनरल एडवरटाइजर नामक साप्ताहिक पत्र प्रारम्भ किया गया। वस्तुतः इसी दिन से भारत में पत्रकारिता का विधिवत प्रारम्भ माना जाता है और धीरे–धीरे समाचार पत्रों की संख्या बढ़ती गई। हिन्दी भाषा का पहला समाचार पत्र 30 मई 1826 को 'उदन्त मार्तण्ड' भी बंगाल से प्रकाशित हुआ। 15 अगस्त 1947 को स्वतन्त्रता के बाद तीव्र गति से पत्र–पत्रिकाओं का विकास और प्रचार हुआ। स्वतन्त्र भारत में पत्रकारिता का लक्ष्य देश के आर्थिक–सामाजिक विकास में जन–जन की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करना था। इस समय दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, पत्र–पत्रिकाओं का जन्म हुआ।[4]

इसी संदर्भ में जब हम उत्तराखण्ड के समाचार पत्रों के इतिहास की ओर देखें तो हमें अत्यन्त गर्व होता है कि यहां के समाचार पत्रों ने विदेशी शासन के बहिष्कार के लिए यहाँ की जनता के दिलों को मजबूत किया। उत्तराखण्ड में स्थानीय पत्रकारिता का उदय सर्वप्रथम 1868 में "समय विनोद" नाम का समाचार पत्र जयदत्त जोशी के सम्पादन में जसपुर (नैनीताल) से निकला। यह उत्तराखण्ड से निकलने वाला पहला समाचार पत्र था। 1871 में डिबेटिंग क्लब के संस्थापकों में से एक बुद्धिबल्लभ पंत के संपादकत्व में "अल्मोड़ा अखबार" का प्रकाशन आरंभ हुआ। यह प्रमुख अंग्रेजी पत्र पायनियर का समकालीन था। इसके अन्य संपादक मुंशी इम्तियाज अली, जीवानन्द जोशी, सदानन्द सनवाल और विष्णु दत्त जोशी एवं 1913 के पश्चात बद्रीदत्त पांडे ने किया। 1918 में अल्मोड़ा अखबार के बंद होने के कारणों में बद्रीदत्त पाण्डे के प्रमुख लेख थे। कुली बेगार, जंगलात नीति, भष्ट्र नौकाशाही, सामाजिक कुरीतियों, आर्थिक शोषण, सरकारी नीतियों आदि अनेकों विषयों को बद्रीदत्त ने ये सारे प्रश्न इस अखबार में उठाए थे। उत्तराखण्ड का दूसरा लेकिन 48 साल की लंबी उम्र (1871–1918) तक जीवित रहने वाला यह पहला देशी पत्र था।[5]

1902 में लैन्सडौन मासिक "गढ़वाल समाचार" का प्रकाशन शुरू किया। यह समाचार 16 पृष्ठों का होता था और उसको मुद्रित मुरादाबाद से किया जाता था और 1905 में गढ़वाली परिषद की ओर से "गढ़वाली" पत्र गिरजा दत्त नैथानी के सम्पादन में निकला था। अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने वाला यह एक महत्त्वपूर्ण पत्र था। इस पत्र पर कई मुकद्मे भी चले। 1905 में ही गिरजा दत्त नैथानी के सम्पादक में निकलने वाला तीसरा समाचार पत्र था "पुरूषार्थ" इसका पहला अंक निकला था 1918 ई0 में "अल्मोड़ा अखबार के होली अंक में तत्कालीन डिप्टी कमिशनर लोमस द्वारा तानाशाही, अयाशी और मजदूरों पर छर्रे मारने की घटना जब पत्र में छपी तो यह पत्र "अल्मोड़ा अखबार" प्रशासन का कोप भाजन बना। जहाँ एक ओर पत्र से 1000 रू0 जुर्माना माँगा, उसी क्रम में प्रकाशन सदानन्द सनवाल से इस्तीफा लिखा लिया। इस प्रकार 48 वर्ष की लम्बी यात्रा के पश्चात् इस पत्र का निकलना बन्द हो गया। अतः इस समय पुरूषार्थ समाचार ने इस सन्दर्भ में कहा था–

"एक फायर में तीन शिकार
कुली, मुर्गी और अल्मोड़ा अखबार।"

कुमाऊँ में अल्मोड़ा अखबार के बंद होने पर पुनः प्रबुद्ध लोगों ने अखबार को निकालने की सोची और उसका प्रतिफल 18 अक्टूबर 1918 को विजय–लक्ष्मी के दिन "शक्ति" समाचार पत्र का प्रथम अंक प्रकाशित हुआ। शक्ति पत्र कुमाऊँ की राष्ट्रीय आन्दोलन की कट्टर सेविका, किसानों तथा मजदूरों की सहायिका, स्वराज्य की पुजारिन तथा अन्याय की विरोधी थी। अतः इसके सम्पादक क्रमशः बद्रीदत्त पाण्डे, दुर्गादत्त पाण्डे, मनोहर पंत, कृष्ण चन्द्र जोशी, मथुरा दत्त त्रिवेदी, धर्मानन्द पाण्डे आदि थे। वास्तव में 'शक्ति' के संम्पादकीय लेखों ने स्पष्ट रूप से राष्ट्रप्रेम दिखाया है–

राष्ट्र को उठाना, बिखरी हुई जाति को जातियता के सूत्र में बाँधना, पुरानी हड्डियों में जान डालना, 33 करोड़ भारतीय सन्तानों के कानों में राष्ट्रीय गायत्री का यह पवित्र मंत्र फूँकना कि जातियों में नया जीवन, नया उत्साह और जोश पैदा हो जाये, बड़ा कठिन कार्य है।[6]

अब समाचार पत्रों ने धीरे– धीरे समस्त उत्तराखण्ड वासियों को अपनी– अपनी ओर आकर्षित किया। इसके परिणाम स्वरूप समाचार पत्रों की बाढ़ सी आ गयी। सन् 1893–94 के लगभग बाबू देवीदासजी ने कुमाऊँ प्रिटिंग प्रेस खोला और उससे कुछ दिनों तक 'कूर्माचल समाचार' नामक साप्ताहिक पत्र निकलता रहा। शक्ति की नीति से अप्रसन्न होकर कुछ हिस्सेदारों ने अपने रूपये लेकर 1919 में सोम्बारी प्रेस खोला। उस के कुछ समय तक 'ज्योति' नामक पत्रिका निकाली। बाद में यह समाचार पत्र बन्द हो गया। सन् 1918 में रानीखेत के ऐंग्लो–वरनाक्लूर प्रेस से 'हिमालय' नाम का मासिक पत्र कुछ समय तक निकला, फिर वह बंद हो गया। 'कुमाऊँ प्रिटिंग वर्क्स' से 'कूर्माचल मित्र' नामक साप्ताहिक पत्र निकला। सन् 1918 में डिबेटिंग क्लब प्रेस को उससे एक हिस्सेदार ने खरीद लिया और उसका नाम विध्यवासिनी प्रेस हो गया। उससे 'जिला समाचार' नामक साप्ताहिक पत्र 1922 से निकलने लगा। बाद को यह 'कुमाऊँ–कुमुद' हो गया। 1928 में नैनीताल से कुछ समय तक 'हितैशी' नामक पत्रिका निकली और यह पत्र भी बन्द हो गया।[7]

फरवरी 1913 में ब्रह्मानन्द थपलियाल तथा पंडित सदानन्द कुकरेती ने पौड़ी से "विशाल कीर्ति" नामक मासिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। इस पत्र को गढ़वाली भाषा में निकाला गया। इस बीच यहीं से महेश चन्द्र थपलियार ने 'हृदय' नामक समाचार पत्र निकाला। 1922 में अल्मोड़ा से बसन्त कुमार जोशी के सम्पादक में 'कुमाऊँ कुमुद' का प्रकाशन हुआ जोकि 1945 तक छपता रहा। यह पत्र राष्ट्रीय स्वतंत्रता से जुड़ा था। पौड़ी से कुछ समय तक कोतवाल सिंह ने 'क्षत्रियवीर' नामक पत्र निकला। सन् 1923 में बैरिस्टर मुकुन्दीलाल ने "तरूण कुमाऊँ" नामक पत्र का प्रकाशन शुरू किया परन्तु दो वर्ष के अन्तराल के बाद यह पत्र भी बन्द हो गया। अप्रैल 1924 ई0 में आन्दोलनकारी विचारधारा वाले युवा कृपाराम मिश्र 'मनहर' ने कोटद्वार से 'गढ़देश' मासिक पत्र का प्रकाशन किया। इस पत्र ने गढ़वाल के सांस्कृतिक जन–जागरण में उल्लेखनीय भूमिका निभायी और कुमाऊँ से निकलने वाला तीसरा महत्त्वपूर्ण पत्र 'स्वाधीन प्रजा' का पहला अंक 1930 को कुमाऊँ के बादशाह के नाम से चर्चित विक्टर मोहन जोशी के संपादक में निकला।[8]

1935 ई0 में 'समता' का प्रकाशन अल्मोड़ा से हरिप्रसाद टम्टा द्वारा किया गया। समता पत्र राष्ट्रीय आन्दोलन के युग में स्थानीय स्तर पर दलित जागृति का पर्याय बन गया। इस पत्र का मुख्य उद्देश्य उत्तराखण्ड में व्याप्त सामाजिक बुराइयों को दूर करना था। साथ ही गढ़वाल के प्रमुख राष्ट्रवादी भक्तदर्शन और भैरव दत्त धूलिया के प्रयासों से सन् 1939 की बसन्त पंचमी के दिन लैसडाउन से 'कर्मभूमि' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इस पत्र ने ब्रिटिश गढ़वाल और टिहरी रियासत में राजनैतिक चेतना को फैलाने का कार्य किया।[9]

इसी क्रम में 1939 में पीताम्बर पाण्डे ने हल्द्वानी से 'जागृत जनता' का प्रकाशन किया। अपने आक्रामक तेवरों के कारण 1940 में इसके सम्पादक को सजा तथा 300 रू जुर्माना किया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व प्रकाशित पत्रों में से कुछ ही समाचार पत्र सन् 1947 के बाद भी प्रकाशित हो सके क्योंकि स्वाधीनता पूर्व के अधिकांश पत्रों का जो उद्देश्य था वह प्राप्त हो चुका था। फिर भी ठीक 15 अगस्त 1947 को भगवती प्रसाद पांथरी, गोपेश्वर कोठियाल, आदि ने देहरादून से 'युगवाणी' का प्रकाशन आरम्भ किया। यह पत्र मूलतः प्रजामंडल का पत्र था। यह पौड़ी जनपद में लोकप्रिय हुआ क्योंकि ब्रिटिश गढ़वाल से अंग्रेजीराज खत्म होने के बाद इस अंचल के नेताओं ने टिहरी रियासत के जन संघर्ष में अपनी शक्ति लगा दी थी और जिसे युगवाणी और कर्मभूमि ने एक सार्थक मंच प्रदान किया। इसका महत्व टिहरी रियासत के अंतिम दो सालों के आंदोलनों के संदर्भ में अधिक था। यह पत्र मासिक पत्रिका के रूप में निकला और उत्तराखण्ड की अग्रणी पत्रिकाओं में से एक था।[10]

उत्तराखण्ड के समाचार पत्रों के संबध में बद्रीदत्त पाण्डे, हरि प्रसाद टम्टा, शक्ति प्रसाद सकलानी इत्यादि द्वारा प्रकाश डाला गया है। प्रस्तावित शोध पत्र के अर्न्तगत उत्तराखण्ड के समाचार पत्रः एक ऐतिहासिक अध्ययन पर पुरासाक्ष्यों, साहित्यिक व ऐतिहासिक, निजी दस्तावेजों, प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं के आधार पर इस संबंध में एक विष्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। लेकिन एक परिमार्जित सुसंगठित व सूत्रबद्ध संकलित जानकारी का इस क्षेत्र के संबंध में अभाव रहा है। इसी ने मेरी इस विषय पर शोध पत्र प्रकाशित करने की इच्छा को आन्तरिक ऊर्जा प्रदान की है।

सन्दर्भ–सूची

1. भनावत, संजीव, पत्रकारिता का इतिहास एवं जन–संचार माध्यम, प्रकाशन युनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2010 पृष्ठ 3
2. पंत, एन0सी0, द्विवेदी, मनीश, पत्रकारिता एवं जन–संम्पर्क, नई दिल्ली, प्रकाशन, कनिष्क पब्लिकेशन, 2007, पृष्ठ11
3. सकलानी, शक्ति प्रसाद, उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का इतिहास, उत्तरा प्रकाशन, रूद्रपुर, 2004, पृष्ठ 32–33

4. पाण्डे, एस0 के0, आधुनिक भारत, इलाहाबाद प्रकाशन, प्रयाग एकेडमी, 2010, पृष्ठ 242–244
5. पाठक, शेखर, पहाड़ 18, परिक्रमा प्रकाशन, तल्ला डांडा, तल्लीताल, नैनीताल, 2013, पृष्ठ 113
6. शर्मा, भुवन, हिमालयी इतिहास के विविध आयाम, पृष्ठ 239–244
7. पाण्डे, बद्रीदत्त, कुमाऊँ का इतिहास, श्याम प्रकाशन, अल्मोड़ा, 1990–97 पृष्ठ 152
8. स्वाधीन संग्राम में गढ़वाल–स्मारिका भाग1, स्मारिका प्रकाशन, पौड़ी, 1997–98 पृष्ठ 43–44
9. साह, ज्योति, शक्ति के तीन दशक, देहरादून प्रकाशन, पहाड़ परिक्रमा, तल्ला डांडा, नैनीताल 2009, पृष्ठ 293–244
10. रावत, अजय, उत्तराखण्ड का समग्र राजनैतिक इतिहास, अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी, 2016, पृष्ठ 363–364